भजन

तर्ज :- दुनियां बनाने वाले क्या तेरे दिल में

मेहर बरसाने वालें, इतनी मेहर बरसाई रूहें खिचीं चली आई
जाग्रत बुध दे के, निसबत तुमने बताई रूहें खिचीं चली आई

1.) इश्के-समुंदर हक महबूब का दिल
चरण कमल मेरी रूह की मंजिल
इनके सिवा ना कोई और ठिकाना
निसबत बिना नहीं ये जाने जमाना
मूल खिलवत में, सुरता तुमने जगाई, रूहें खिचीं चली आई.

2.) तुम बिन कुछ भी ना चाहे, अरवा अर्श की
गुफ्तगु धनी की माँगे, प्रीत खसम की
बैठक धनी की जहाँ अर्श वहीं है
सोहोबत वतन की जहाँ, चैन वहीं है
वाणी अर्श की देके, रूहें तुमने बुलाई, रूहें खिचीं चली आई.

3.) आशिक फुरसत ना पाते, जिक्रे सुभान से
रूसवा जहाँ से रहते, हक पे कुरबान वे
ऐसे मोमिन की करें हक भी सिफायत
बख्शे अर्श की साहेबी, और बख्शे न्यामत
दुनियाँ अखंड करेंगे, इतनी दीन्हीं बढ़ाई, रूहें खिचीं चली आई.

4-) रहते हो साहेब जिस रूह की नजर में
हरदम वो रहती है तेरी रहगुजर में
हर-सू दिखाई देते, जलवे अरश के
देखन को रहते हैं तन वो फर्श पे
अपनी रूहों पे तुमने मेहरों-करम यूँ लुटाई, रूहें खिचीं चली आई.